संपादकीय

भारतीय आधुनिक शिक्षा की अकादमिक संपादकीय समिति की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ! यह नववर्ष 2022 हम सभी के लिए नए संकल्प एवं उत्साह लेकर आया है। ऐसे संकल्प जो आज़ादी के अमृतकाल में देश को और समर्थ एवं सक्षम बनाने वाले हैं। यहाँ से हमें कुछ नया करने का संकल्प लेना है, जिसमें हमारी शिक्षा प्रणाली के संकल्पों को आधार देने के लिए हमारे पास *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* है। हमने इस नीति के क्रियान्वयन की शुरुआत कर दी है, जिसकी कार्य योजना 'सार्थक' दस्तावेज़ में की गई है। "सार्थक" के आधार पर राष्ट्रीय स्तर से स्थानीय स्तर तक की शिक्षा व्यवस्था से जुड़ी सभी इकाइयाँ शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने तथा बच्चों एवं युवाओं तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने के विविध प्रयासों में जुट गई हैं। इन्हीं प्रयासों की कड़ी में, इस अंक में विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के विविध पहलुओं पर आधारित लेख एवं शोध पत्र सम्मिलित किए गए हैं।

विद्यालय में शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जाता है, जिसे बाल संसद के रूप में नवाचारी शिक्षण-अधिगम द्वारा विद्यार्थियों को सिखाया जा सकता है। इसी पर आधारित लेख 'विद्यालय में लोकतांत्रिक मूल्यों को सीखने में बाल संसद की भूमिका— एक नवाचारी प्रयास' में बाल संसद का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। साथ ही, इस लेख का मुख्य उद्देश्य बाल संसद के माध्यम से विद्यालय संचालन में विद्यार्थियों में विविध क्षमताओं का विकास करना तथा विद्यालय संचालन में उनकी भूमिका को बताना है।

देश की शिक्षा व्यवस्था के विकास में लोकतांत्रिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्थानीय स्तर पर पंचायती राज संस्थाओं की विशेष भूमिका होती है। इसी विकेन्द्रीकरण को शोध पत्र 'विद्यालयी शिक्षा के विकास में ग्राम शिक्षा समितियों की भूमिका का अध्ययन' में बताया गया है।

भारत में सामान्यत: महिलाओं के सशक्तिकरण को उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक गतिविधियों में सहभागिता के आधार पर प्रदर्शित किया जाता है। इसी पर आधारित लेख '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की दृष्टि में महिला सशक्तिकरण' के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को एक भिन्न परिप्रेक्ष्य से समझाने का प्रयास किया गया है, जिसमें सांस्कृतिक सशक्तिकरण प्रमुख है।

प्रसन्नचित शिक्षार्थियों में अधिगम एवं विकास सरलतापूर्वक होता है, जिसके परिणामस्वरूप उनका शैक्षिक प्रदर्शन भी बेहतर होता है। शोध पत्र 'खुशहाली पाठ्यचर्या एवं गणित फोबिया— एक अध्ययन' खुशहाली पाठ्यचर्या के बारे में शिक्षार्थियों की धारणा और विद्यालय में पढ़ते समय शिक्षार्थियों में व्याप्त गणितीय भय की समस्या को हल करने में खुशहाली पाठ्यचर्या की भूमिका को प्रस्तुत करता है।

'वाह रे! बोर्ड परीक्षाफल' एक ऐसा लेख है, जो विद्यार्थियों के भविष्य के निर्माण में कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं पर आधारित है। इस लेख में लेखक द्वारा बताया गया है कि बच्चों द्वारा प्राप्त प्रतिशत की रेखा पिछले कुछ दशकों से जिस तेज़ी से ऊपर की ओर बढ़ती जा रही है, वह सभी का ध्यान अपनी ओर खींचती है। लेकिन चिंतन का विषय यह है कि पहले ऐसा क्यों नहीं था? बच्चे बदल गए

या मूल्यांकन करने वाले या परीक्षा प्रणाली? इसी सवाल, इसके महत्व, वर्तमान समय के मूल्यांकन और परीक्षा परिणामों को लेखक ने इस लेख में एक काल्पनिक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

'संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता प्रतिमान एवं शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता' पर आधारित लेख दिया गया है। जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि कैसे संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता प्रतिमान के द्वारा 'सोच' को दृश्यमान बनाने का कार्य किया जाता है।

वहीं 'आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की विद्यालयी शिक्षा में प्रासंगिकता' पर आधारित लेख आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को शिक्षण-अधिगम की एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में प्रस्तुत करता है। यह लेख न्याय और सामाजिक समानता के बारे में विद्यार्थियों की जागरूकता को मज़बूत करने तथा अपने ज्ञान में सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका के जनवरी 2017 से अक्तूबर 2020 की समयावधि में प्रकाशित हुए 16 अंकों में से सात शोध पत्रों का चयन कर किए गए शोध अध्ययन पर आधारित शोध पत्र 'नवाचारी शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता— एक परा-विश्लेषणात्मक अध्ययन' दिया गया है। इस शोध अध्ययन में शोधार्थियों द्वारा शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर किसी न किसी नवाचारी शिक्षण विधि की प्रभावशीलता के अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है। जबकि लेख '*भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका के वर्ष 2014 से 2019 तक प्रकाशित अंकों का बिब्लिओमेट्रिक विश्लेषण' प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ सूची के अध्ययन में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है। इस शोध पत्र में विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों में लिखे गए लेखों के विषयों की मैपिंग भी प्रस्तुत की गई है, जो पाठकों को इस पत्रिका के व्यापक स्वरूप को समझने एवं योगदान देने में मार्गदर्शित करेगी।

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था निर्धारित मानदंडों एवं प्रक्रियाओं से संपन्न होती है जो संवैधानिक मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों एवं उसके ताने-बाने से संबंधित होती है। शोध पत्र 'विद्यालयी शिक्षा एवं मदरसा शिक्षा व्यवस्था में अंतर्द्वंद्व एवं सार्थक समाधान' में शोधार्थियों द्वारा अनौपचारिक मदरसा शिक्षा और औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के बीच शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं पाठ्यसहगामी गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनमें व्याप्त अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, इन अंतर्द्वंद्वों के समाधान को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* तैयार की गई है। इन्हीं सरोकारों को इतिहास विषय में सहजता से समावेश कर पढ़ाया जाता है। इन्हीं सरोकारों को शोध पत्र 'विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृति एवं समस्याएँ— एक अध्ययन' प्रस्तुत करता है। इस शोध अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया गया कि इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों और अध्यापकों की सकारात्मक अभिवृत्ति है किंतु विद्यार्थियों में उपयुक्त सहायता एवं मार्गदर्शन न मिलने के कारण उनमें इतिहास विषय की जागरूकता का अभाव है।

वहीं शोध पत्र 'अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन' दिया गया है। इस शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व पर प्रभाव पड़ता है।

अकादमिक संपादकीय समिति